ALL RIGHTS RESERVED
सर्वाधिकार सुरक्षित

09/FE/CC/M–2019–29

2019

हिन्दी भाषा और साहित्य

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक* : 300

अनुदेश :

- उपांत के अंक पूर्णांक के द्योतक हैं।
- प्रश्न-पत्र **दो** खण्डों में विभाजित है।
- प्रत्येक खण्ड से **तीन** प्रश्नों को चुनते हुए कुल **छः** प्रश्नों के उत्तर दें।
- परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
- एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जाएँ तथा उनके बीच में अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जाएँ।

खण्ड—क

1. मध्यकालीन साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर सविस्तार प्रकाश डालते हुए ब्रजभाषा में रचित भक्तिकाव्य एवं रीतिकाव्य का उल्लेख कीजिए। 50

2. भाषा के मानकीकरण से क्या अभिप्राय है? हिन्दी भाषा के मानकीकरण के विविध बिन्दुओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 50

3. हिन्दी भाषा के उद्‌भव एवं विकास पर विचार करते हुए हिन्दी भाषा की उपभाषाओं के पारस्परिक संबंध को सोदाहरण विवेचित कीजिए। 50

Scanned with CamScanner

4. हिन्दी साहित्येतिहास के भक्तिकाल को स्वर्णयुग की संज्ञा क्यों प्रदान की गयी है? इस प्रश्न का तथ्यात्मक विवेचन कीजिए। 50

5. द्विवेदी युगीन काव्य की उन प्रवृत्तियों को काव्य-पंक्तियों के उद्धरण के साथ विवेचित कीजिए जिनसे तद्युगीन समाज-सुधार एवं स्वातंत्र्य बोध को बल प्राप्त होता है। 50

6. हिन्दी नाटक और रंगशाला के इतिहास पर प्रकाश डालिए। 50

खण्ड—ख

7. कबीर के काव्य के कालजयी पक्षों का विश्लेषण सोदाहरण कीजिए। 50

8. 'भ्रमरगीत' की रचना के कारणों पर विचार करते हुए उन्हें सूरदास के पदों से पुष्ट कीजिए। 50

9. 'रामचरितमानस' के अयोध्याकांड के आधार पर तुलसीदास की आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि का विश्लेषण उदाहरण सहित कीजिए। 50

10. 'चंद्रगुप्त' नाटक में चित्रित भारतीय संस्कृति के उदात्त पक्षों का विश्लेषण नाट्य-पंक्तियों को उद्धृत करते हुए कीजिए। 50

11. 'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास को व्यक्तिवादी या मनोविश्लेषणवादी उपन्यास की श्रेणी में सम्मिलित कर उपन्यास में व्याप्त सूक्ष्म समष्टि-चिन्तन की उपेक्षा करना एक पक्षीयता है। इस कथन का विश्लेषण उपन्यास-पंक्तियों को उद्धृत करते हुए कीजिए। 50

Scanned with CamScanner

12. प्रस्तुत अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए रचनाकार के भाषा-प्रयोग-कौशल एवं संबद्ध अवतरण के प्रतीयमान अर्थ पर प्रकाश डालिए : 25×2=50

(क) "कर्म में आनंद अनुभव करने वालों ही का नाम कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनंद भरा रहता है कि कर्त्ता को वे कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और क्लेश का शमन करते हुए चित्त में जो उल्लास और तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है। उसके लिये सुख तब तक के लिये रुका नहीं रहता जब तक कि फल प्राप्त न हो जाय; बल्कि उस समय से थोड़ा-थोड़ा करके मिलने लगता है जबसे वह कर्म की ओर हाथ बढ़ाता है।"

(ख) "देखो, बन्धुवर सामने स्थित जो यह भूधर
शोभित शत-हरित-गुल्म-तृण से श्यामल सुंदर,
पार्वती कल्पना हैं इसकी, मकरन्द-विन्दु,
गरजता चरण-प्रान्त पर सिंह वह, नहीं सिन्धु,
दशदिक्-समस्त हैं हस्त, और देखो ऊपर,
अम्बर में हुए दिगम्बर अर्चित शशि-शेखर,
लख महाभाव-मंगल पदतल धँस रहा गर्व—
मानव के मन का असुर मंद, हो रहा खर्व।"

★★★

Scanned with CamScanner

7295845488

Inutile